MAITHILI

श्री

गणनाथपदावली

तथा

विन्ध्यनाथपदावली

रचयिता

विन्ध्यनाथ झा

तथा

गणनाथ झा



प्रकाशक

गङ्गानाथ झा

मुद्रक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९३८

मूल्य ॥)

Printed by K. Mitra,
at The Indian Press, Ltd., Allahabad.

श्री

समर्पण

दूगोट पदावली प्रकाशित होइछ। ईदूनू हमर दुहू जेठ भाइक रचित थीक। यद्यपि विन्ध्यनाथ बाबू जेठ छलथीन्ह तथापि गणनाथ बाबूक पदावली आदि भाग में राखल तकर कारण ई जे गणनाथ बाबूक रचित पद्यक संख्या अधिक छल ओ विन्ध्यनाथ बाबूक रचित कम, ओ गणनाथ बाबूक रचित पद्य हुनक परिणतप्रज्ञ अवस्थाक छलैन्ह ओ विन्ध्यनाथ बाबूक बाल्यावस्था में रचित। पन्द्रहम वर्ष में पद्य-रचन क रुचि भेलैन्ह ओ अनेक रचना कैलैन्ह। परन्तु हिनकनि पिता कहल-थीन्ह जे "गीत कवित्त बनबैतछी भने परन्तु सुनल थीक जे भाषाकाव्य अगण भेने अशुभ होइत छैक तेँ छन्दःशास्त्र पढ़ि लिअ तखन बना-एब—तावत् जनु बनाबी"। एहि आज्ञाक अनुसार गीत कवित्त बनाएब छाड़ि देलैन्ह। पश्चात् विद्योपार्जन कयला पर राजक कार्य में व्यग्र भय गेलाह ओ जे किच्छु काव्यक अनुराग रहैन्ह से शिव-भक्ति में परिणत भय गेलैन्ह—काव्यरचना दिश प्रवृत्ति नहि भेलैन्ह। तथापि हुनको कीर्ति रहैन्ह ताहि उद्देश्यें अठारह गोट गीतकवित्त प्रकाशित कराय देलैन्ह अछि॥

गणनाथ बाबू २० वर्षक उपर रचना करय लगलाह परन्तु उत्तमक्रमे रचना हुनक जे छैन्ह से काशीवासकालक भक्ति भावोद्गार-मूलक। ई भक्तिभाव कोन पराकाष्ठा धरि पहुँचि गेलछलैन्ह से पदावली के दत्तचित्त भय पढ़ला सँ ज्ञात होएत॥

यथावसर यथारुचि दूनू भाई मैथिली हिन्दी दूनू भाषा में रचना करथि॥

हमरा तीनू भाइ में केहन स्नेहछल से वैशक वृद्ध वर्ग के शात छैन्ह । हम तीनू में छोट रही । पुरनका पद्य सभ बहुत हमरे हाथक लिखल अछि । से सभ देखि आइ अतुल प्रेमभक्ति में मग्न भय ई दूनू पदावली दुहू भाइक चरण मे अर्पित करैत छी ॥

प्रयाग
फाल्गुनी पूर्णिमा १३४५ साल } श्री गङ्गानाथ झा

श्रीः

गङ्गानाथपदावली

मैथिली

१—देवीपद

(१)

सुदिढ़ भगति दिअ दिअ करुनामयि
राखिअ निज गनि दास तारे ॥ध्रु०॥
जप तप नियम अचार विहित विधि
आगम निगम विचार ।
गुरुवर तुअ अनुरूप वचन मधु पिबि
थिर ज्ञान अपार ॥१॥
तुअ पद प्रेम नेम एक अविकल
चित अनुखन अवगाह ।
दुस्तर भवभ्रम श्रम दुख दारुन
छुटल सकल विधि दाह ॥२॥
तुअ गुन गान नाम सुनि गदगद
पुलक नयन जलधार ।

सतत निरत तुअ पद सरसीरुह
चित मधुलिह निरधार ॥३॥
कतेक कि कहब कोन विधि कि कहब
और न सुझय उपाय।
माऊ प्रनत गणनाथ दयामयि
निरदिस होउ सहाय ॥४॥

(२)

एहन दिवस मोर होएत जपइत तारिनि नाम।
नयनयुगल भरि बरिसत भगति सलिल अविराम ॥१॥
पुलकि पुलकि पुन थरथर गदगद बोल अनूप।
तसु पद रत मति अनुखन देखब जगत तसु रूप ॥२॥
हृदयकमल विकसित भेल छुटत मनक अधिकार।
तारिनि चरण सरोरुह पसरि प्रकाश प्रचार ॥३॥
गुरुवर पद सरसीरुह रजकण पावि सनाथ।
कुल क्रम तारिणि सेवक गाव प्रणत गणनाथ ॥४॥

(३)

त्रिभुवनजननि दरस तुअ पाओल
जनम सफल भेल मोर—अम्बे ॥ध्रु०॥
तुअ दरसन परसन गुनकीर्त्तन
जपतप अचल प्रचार।

अमरहुँ के दुर्लभ अनुखन थिक
आनक ककर विचार ॥१॥
किछु दिन तुअ पुर रहि आब चललहुँ
हृदय उमड़ि रह पीर।
आदि त्रिदेवहुँ एहन विपति भेल
सुमरि धरय किछु धीर ॥२॥
अमृत पावि चित लुबुधि लुबुधि रह
बहुत कहब की तोहि।
कबहुँ कबहुँ दरशन दय दय कहुँ
करब कृतारथ मोहि ॥३॥
श्री मिथिलेशचरणसेवाफल
हमरउ एहन सोहाग।
माऊ प्रणत गणनाथ देरु मोहि
तुअ पद रह अनुराग[१] ॥४॥

(४)

अति प्रिय अछि बुझि जननि कएल
हम अपन हृदय शमशान।
करब निवास सतत अहाँ मन गुनि
शङ्कर वचन प्रमान ॥१॥

१ श्रीकामाख्या स विदा होएबाक दिन (रचनाकाल) सन् १३२८ साल कार्त्तिक शुक्ल ४ रविवार १४-११-१९२०ईसवी।

नित तुअ पूजन जपतपरत हम
अभिरत तुअ गुनगान।
पुलकित गदगद नयन नीर बहि
शीतल होएत परान ॥२॥

अधम शरीर पुनीत होएत मोर
बुधि महँ होएत विकाश।
गुरु मनु देवि अभेद होएब हम
पसरत हिअ परकाश ॥३॥

करुणामय गुरुचरण दयानिधि
कणिका पावि सनाथ।
तारापद सरसीरुह मधुलिह
गाव प्रणत गणनाथ ॥४॥

(५)

समदाउनि

अकथ तत्त्व तुअ तारिणि अम्बे महिमा अगम अपार ॥१॥
पुरुष शरीर मनुज तनु धयलहुँ राम विदित संसार ॥२॥
अनुपम श्याम अङ्ग सम सुन्दर नयन युगल रतनार ॥३॥
मर्य्यादा गुण सकल विहित विधि जग व्यवहार प्रचार ॥४॥
धन्य धन्य गणनाथ भाग भेल लखि लखि छवि गुणसार ॥५॥

(६)

चैत

पाओल सिन्दुरवा हो रामा अम्बा पदरज से ॥ध्रु०॥
अचल सोहाग आज भेल निश्चय धन्य जिवनमा हो रामा ॥१॥
छमल सकल अपराध दयामय लहु दरशनमा हो रामा ॥२॥
मिथिलापतिक मनोरथ पूरिअ नत चरननमा हो रामा ॥३॥
गाव सुकवि गणनाथ निरखि छवि आनन्दभवनमा हो रामा ॥४॥

(७)

शङ्करि त्रिभुवन जननि शुभङ्करि
करुणामयपरशिवनारी ॥१॥
विश्वम्भर करुणाकर शङ्कर
उमाकान्त हर त्रिपुरारी ॥२॥
तुअ चरनन सेवारत अनुखन
काशीवास शरण सारी ॥३॥
सोमनाथ गणनाथ विनय कर
पुरहु आस कुमतिन टारी ॥४॥

(८)

साजन जननि चरण।
सेवहु भगति भर अलभ रतन ॥१॥

कते कतेक भएलह कत न।
सफल करहु निज एहि मानव जनन ॥२॥
जेहि पद लगि शिव रहु अनुखन।
भेटु विधिलिपि करि भजन मनन ॥३॥
जत अभिलाष सभ होएत पुरन
लहु लहु सत चित आनन्द सुघन ॥४॥
मानहु विनय गणनाथक यतन
चित दय अम्ब अम्ब करहु रटन ॥५॥

(९)

साजन श्यामा श्यामा श्यामा
मन बच करम रटहु शुभ नामा ॥१॥
भव श्रम बेरथ विनय आठो यामा
अम्ब अम्ब कहि पहिरहु सुख जामा ॥२॥
जनम मरन होवै अवश विरामा
लहहु मोदमय थिर सुख धामा ॥३॥
मानहु निहोर गणनाथ पुर कामा
दयामयि चरण शरण अभिरामा ॥४॥

(१०)

साजन मानिअ वचन
सभ तेजि भजु जगजननिचरन ॥१॥
विधि हरि हर नित करत भजन
सुरगन मुदमय जिनक शरन ॥२॥

जेहि रोम रोम लस अनेक भुवन
होअ रति तेहि पद करिअ यतन ॥३॥
भगति उमड़ि उर सजल नयन
गदगद स्वर अम्ब अम्ब विलपन ॥४॥
सुनहु धरहु गणनाथ सिखवन।
लहहु परसमनि आनन्द सघन ॥५॥

(११)

कि कहब कहल कि जाय जननी ॥
स्वपन दरश दय कएल कृतारथ
आनन्दकोष जगाय ॥१॥
लखनुक विमल भाव उर अन्तर
पुलक भरल बहु नोर।
निरखि रूप तुअ चित मुद मातल
तोहर चरन लगि भोर ॥२॥
डरित दुरित भय भवभ्रम छूटत
पाएब परम विकाश।
रहत मुदित मति तुअ पद युग रति
अतुल अभङ्ग प्रकाश ॥३॥
नयन रूप देखि चरन परसि शिर
मधुर बोल सुनि कान।
एहन सुमङ्गल अनुखन थिर रहु
रसना कर गुणगान ॥४॥

श्रीगुरुदेवचरणसरसीरुह
रजकन पाबि सनाथ ।
तारापद युग कुल क्रम सेवक
नाव प्रणत गणनाथ ॥५॥

(१२)

समदाउनि विजय दशमीक

अयलहुँ अम्ब तनय गुनि मोर गृह
रहि किछु दिन भेल मान ।
चललहुँ आज हृदय जरजर होअ
आकुल परम परान ॥१॥
गदगद कण्ठ हृदय धक धक कर
नयन झहरि बह नोर ॥
कृपाकटाक्ष हेरि करुणामयि
हरिअ सकल दुख मोर ॥२॥
कि करब कि कहब किछु नहिं फुरइछ
भगतिभाव अवलम्ब
एकटक पद हेरि रहिअ निरन्तर
अम्ब अम्ब जगदम्ब ॥३॥
नाव प्रणत गणनाथ जोरि कर
बहुत कहब की तोहि

तुअ पद युगल अमल सरसीरुह
अचल भगति रह मोहि ॥४॥

(१३)

भगवतीक

केवल तुअ पद सेविअ
श्री गुरुबर उपदेश ।
सदय हेरिअ करुनामयि
सभ विधि छुटय कलेश ॥१॥
विकसित हृदय कमल महँ
जोति निरञ्जन तोर ।
देखि मन शान्ति निकेतन
सतत मोदमय मोर ॥२॥
थर थर पुलक भरल तन
नयन नोर अविराम ।
गाएब गदगद आनन्द
तुअ गत मन अभिराम ॥३॥
करु गणनाथ कृतारथ
विनत बिनति सुनु देबि ।
जगतजननि होअ ई फल
केवल तुअ पद सेबि ॥४॥

(१४)

काशी में श्री ताराक धातुविग्रह प्रतिमा अयलापर

एहि कलिकाल उच्च द्विजवर कुल
जनम लकर निरवाह—अम्बे ।
कयलहुँ सकल दयामयि अपनहिँ
उर भरि पसर उछाह—अम्बे ॥१॥
गुरुवर भय उपदेशि निमाहल
क्रमहि सकल आदेश—अम्बे ।
काशी में थिर वास देल मोहि
भव विधि छुटल कलेश—अम्बे ॥२॥
एलहुँ सदन अपन बुझि गृह मोर
राखब नियत निवास—अम्बे ।
तुअ पद प्रेमधार हिअ उमड़ल
नयन युगल परगास—अम्बे ॥३॥
स्नेह भरल थर थर तन पुलकित
गदगद बोल अनूप—अम्बे ।
कएल नेहाल दास करुणामयि
जीवन्मुक्त सरूप—अम्बे ॥४॥
प्रणत मगन गणनाथ जोरि कर
माँग एक वरदान—अम्बे ।
तुअ पद रत थिर तारिणि कहइत
त्यागथि देह परान—अम्बे ॥५॥

(१५)

श्रीक शयनक

कीजिए शयन श्री जगदम्ब
पाउँ अवसर चरन सेवन
होउँ कृतारथ—अम्ब ॥१॥
देहु आयसु देवगन अब जाय निज निज भौन ।
सोय रहु सुख सेज हम सेवै
चरन युग मौन ॥२॥
करि दया पूरे मनोरथ कियो दास नेहाल ।
तुअ चरन एकान्त सेवन
करि तरूँ भवजाल ॥३॥
आनन्दमय गणनाथ विनती
सुनहु तारिणि माय ।
नाम सारथ होय मेरी
तुअ पदाब्ज दवाय ॥४॥

(१६)

भोरुक पहर उठैवाक

दिअ दरशन करुणामयि
सुर मुनि ठाढ़ दुआर ।
दास भवन होअ उत्सव
जगतजननि दरबार ॥१॥

मणिद्वीप सुवरनमय सुरतरु तर अभिराम ।
रतन वेदि मणि मण्डप तुअ शुभ शोभाधाम ॥२॥
कखन देखब भरि लोचन
मूरति परम ललाम ।
प्रणत चरन युग सेवब
करब अनेक प्रणाम ॥३॥
ब्रह्मा हरिहर जेहि भज
आनक ककर हिसाब ।
कवि गणनाथ विनति सत
विनत मोदमय गाब ॥४॥

(१७)

करिअ कृपा जगदम्ब दास पर
तुअ चरनन चित लागै रे ॥ध्रु०॥
तजि सब काज नामरत निशदिन
इत उत नहि भरमावै रे
आनन्द मगन सतत तुअ पद रत
दुरित जाल सम भागै रे ॥१॥
तुअ गुनगान अमिय लहि अनुपम
हृदयकमल विकसावै रे
मन महँ विमल इजोर जोर तें
तुअ पद एक अनुरागै रे ॥२॥

पुलकि पुलकि तन बरिस नयन युग
गदगद तुअ गुन गान रे
विमल भगति परभाव निरन्तर
अचल भगति उर जागै रे ॥३॥
अम्ब अम्ब जगदम्ब दयामयि
शरणागतपालिनि सुखदायिनि
हेरहु सदा गणनाथ दास निज
दीजै वर जत माँगै रे ॥४॥

(१८)

सोहर

गरज अपन जगदम्ब दयामयि याचिअ रे मैया
तुअ चरनन अनुराग सुथिर हम पाबिअ रे ॥१॥
निज सेवकगन सेवक हमरहु लेखिअ रे मैया
चित नित तेहन कवहुँ तुअ पद युग पेखिअ रे ॥२॥
राखल कय निज कोर जोर उर जागल रे मैया
तुअ गुनगान विधान सतत हिअ लागल रे ॥३॥
कवि गणनाथ नेहाल पावि तन नरवर रे मैया
श्री गुरु पद अवलम्ब अम्ब तुअ अनुचर रे ॥४॥

(१९)

करुणामयि जगदम्ब जननि भवजालिनि हे मैया
सत चित आनन्दकन्द ब्रह्म वर भामिनि हे ॥१॥

मन वच करम सतत तुअ पद युग लगि लगि हे मैया
परमानन्द विनोद भगति तुअ पगि पगि हे ॥२॥

बदन गाव सुन कान नाम तुअ गुन गन हे मैया
तुअ पद चान चकोर मोर युत लोचन हे ॥३॥

माङ प्रणत गणनाथ विनत जन पालिनि हे मैया
तुअ पद थिर अनुराग लसय हिअ तारिनि हे ॥४॥

(२०)

भजु भजु जग जननी रे मनुआँ ॥ध्रु०॥
फुलल चोल हृद सित इन्दीवर
शिव उरलस रमनी ॥१॥ रे म......
सुन्दरश्याम युवति छवि ,
मुद्रा पाँच बनी ॥२॥ रे म........
भाल बाल विधु नाग विभूषण
ऋषि लस पिङ्ग फनी ॥३॥ रे म......
बाघछाल कटि मुण्डमाल गर
लह लह लह रसनी ॥४॥ रे म......
खड्ग कर्त्त अरु मुण्ड सु उत्पल
चारु हाथ गनी ॥५॥ रे म......
गाव सुकवि गणनाथ जोरिकर
मानि लेहु इतनी ॥६॥ रे म.......

(२१)

देशी

अतुल सुमङ्गल आज जननि गृह राजय हो ।
दुरित दुरित भेल सकल सुकृति बढ़ि छाजय हो ॥१॥
सोन भूमि मणि रतन भवन वन कानन हो ।
तेजि हमर तथा गेह बास मन भावन हो ॥२॥
के बुझि सक व्यवहार निरीह विहारिणि हो ।
करुणागार सुख्यात दीन जन तारिणि हो ॥३॥
वेकत समाज निरन्तर अनुसन पदगति हो ।
तेहि लगि सब परिवार रइनि दिन रतमति हो ॥४॥
पुलकित गदगद नयन भरलतन थरथर हो ।
एकरदन गणनाथ प्रणत तुअ अनुचर हो ॥५॥

कलशस्थापन दिनूक

(२२)

बाजन बाजै सखिआ बढ़ मङ्गल प्रवाह मोरी हो रामा ॥१॥
जगजननी आइलि छथि पाहुन भेल परम उछाह मोरी ॥२॥
नव दिन सकल जगत श्रम छूटत गेल सम भ्रमदाह मोरी ॥३॥
भक्तिभाव पद लगहु निरन्तर एहि सकल निवाह मोरी ॥४॥
गाव उमगि गणनाथ भावबश एकरद हिअ उमड़ उछाह मोरी ॥५॥

(२३)

निरखु चरनमा हो रामा नैना भरिरे ॥ध्रु०॥
एहि पद रज लगि सृष्टि चराचर भाग पहुनमा ॥१॥ हो रामा
अलभ लाभ पदयुग लगु एहुखन धन्य जिवनमा ॥२॥
नव दिन आनन्द उमगि बिताओल नवओ रतनमा ॥३॥
आज चललि जगजननि अमरपुर लहु दरशनमा ॥४॥
सुदिढ़ भक्ति गणनाथ माङ वर नतचरननमा ॥५॥ हो रामा

(२४)

चलु दरशन जग जननि चरण अरविन्दन ॥ध्रु०॥
अनुपम छवि अभिरामे चित लुभुवल भवशमनि—च०
कुजल चिकुर घनकाँती भाल चान दुख दमनि—च०
तीनि नयन मुख चन्दा लह लह रसन सुगमनि—च०
सृक बहु शोणित धारा फनिभूषण शिवरमनि—च०
बालक शव दुहु काने अपरूप रूप दुख हरनि—च०
अभय सुबर शिर काती चारु हाथ भवतरनि—च०
शव कर हार सुवासे शिव शव उर पदलसनि—च०
कवि गणनाथ पुकारे हेरु सदय दिनदरनि—च०

(२५)

बान्ह मसान कलपतरु तेहि तर मणिमय हो।
अनुपम पीठ विचित्र मणि भूषित बिलसय हो ॥१॥
चहु दिश कैरववृन्द मोदमय सञ्चर हो
त्रिभुवन जननि ततय तुअ आनन्द मन्दिर हो ॥२॥

चतुरानन हरिईश निरन्तर याचथि हो।
आनक ककर हिसाब शास नहिं पावथि हो ॥३॥
तुअ पद रतमति सतत सुदिढ भय माङथि हो।
प्रणत सुकवि गणनाथ भक्त वर गावथि हो ॥४॥

सन् १३२७ साल में राजनगर मध्य एकहि प्रतिष्ठा
पर आश्विन, माघ चैत्र ओ आषाढ़क चारि-
नवरात्रमध्य पूजा में आषाढ़ शुक्ल १०
शुकदिन विसर्जनक अवसर पर

(२६)

समदाउनि

कि कहब जननि कहथ नहिं आबय छमिअ सकल अपराध ॥
नवओ रतन नव मास बितित भेल तुअ पद लगि परमान
चललहुँ आज तेजि सेवकगण आकुल सभक परान
सून भवन देखि थिर न रहत हिअ नयन झहरि रहु नोर
गदगद बोल अम्ब तन थर थर हेरिअ लोचनकोर
चारि मास तत युग सम बुझ पड़ केहि विधि मन धर धीर
करुणागार दीनजनतारिणि हरिअ सकल उरपीर
माङथि वर गणनाथ रमेश्वर महाराज अधिराज
दारा सुअन सहित मिथिलेश्वर चिरजीवथु शुभकाज ॥

(२७)

लगनी

कतेक कतेक तन भव भ्रम नचलहुँ
बिसरल सकल कतेक दुख कटलहुँ
जननि चरन सरसीरुह आबहुँ
धय रहु रे की ॥१॥

ललित श्याम छवि पद युग शिव पर
परम तेज मुण्डमाल राज गर
परब्रह्म परमेश्वरि भजु जग-
दीश्वरि रे की ॥२॥

जेहि सँ जगत जनय सब होअ लय
जेहि तेजि आओर नसत किछु निश्चय
सुर मुनि एक अवलम्बहि भजु
जगदम्बहि रे की ॥३॥

श्रीगुरुवर उपदेश भक्ति भर
गहु हिअ विमल भगत सुरतरुवर
चारु पदारथ करगत थिर सुख
अनुगत रे की ॥४॥

लक्ष्मीवति सिख मानि निरत नित
भजि गणनाथ नेहाल चरन चित
होअ कृतारथ नरतन भजि तसु
चरनन रे की ॥५॥

(२८)

जय जगदम्ब ए ।
जय सघन नीरद रुचिपवित्रे
कान्तिदामिनि थिर विचित्रे ए
पादलम्बित कच त्रिनेत्रे जयति जय जय अम्ब ।
जय जन्मथितिलयचक्रचारिणि
अभय वर असि मुण्ड धारिणि
चारि भुज गर मुण्ड मालिनि
सदाशिव आलम्ब शव पर
युगल पद शुभ लोल रसना
भाल विधु लस गगनबसना
शवकरावलि ललित रसना
शोभमान नितम्ब ।
ब्रह्माण्ड कोटि सुरोमकूपा सकल सुर
गण एकरूपा
घोरहासा ब्रह्मरूपा हेरहु होत विलम्ब ।
माँग कवि गणनाथ पदरत

श्रीरमेश्वरसिंह अनुगत देहु श्रीमिथिलेश
पदरत निज चरण अवलम्ब ।

(२९)

जय हरिरमनी जय हरिरमनी ।
सहज ललित छवि विधुदमनी ।
सुन्दर बदन नयन भल राजित विमल कमल दुहु दुख शमनी ॥
उदधिसुता अवतार भारभवमोचन हेतु प्रगट रमनी ।
राम नाम अभिराम गान सुनि सतत लुबुध मोहित हरिनी ॥
आदि शक्ति परमेशि भगत मन कुमुद विकाशन विधु अवनी ।
सकल असार भार व्याकुलि महि एक अवलम्ब हंसगमनी ॥
तेजपुञ्ज रञ्जित मन अनुछन जग व्यवहार भार वहनी ।

(३०)

तारा तारा भजहु निरन्तर तारा सम सुख सारा ॥ ध्रु० ।
मूलाधार जागि करुणामयि छवओ कमल भव पारा ।
सहस्त्रार गुरुदेव सङ्ग मिलि परमानंद अपारा ॥१॥
गुरुमनुदेवि अभेद भाव थिर यतन रहहु निरधारा ।
भगति योग अविनाश मोद लहि करमबन्ध करु छारा ॥२॥
विकसत हृदय विमल सरसीरुह अनुप प्रकाश पसारा ।
मन अन्हियार विलायत तहिखन नित्यानन्द प्रचारा ॥३॥
छुटहु प्रपञ्च पञ्च पञ्चन के गुरुवर पद आधारा ।
भानुबचन गणनाथ परमहित जगत जाल छुटकारा ॥४॥

(३१)

आसावरी-सिन्दूरा

तारिणि चरन भज भगति विभव नित ॥ध्रु०॥
मनन यजन गुनगान ध्यान करु
वृथा फिरहु परवश इतउत कित ॥१॥
हृदय-सरोज ओजभरि विकसय
अविनाशी प्रकाश लहु सत चित ॥२॥
आनन्द कोश जागि सुख लूटहु ।
छुटै सहज भ्रम मोह जाल जित ॥३॥
गुरुमनुदेवि अभेद होउ भल
भानु सुकवि गणनाथ सौखहित ॥४॥

(३२)

मूल अधार चारि दल व-श-ष-स
भूपित सुवरन वरन सुसरवस
गुह्य अरु मेढ्र मध्य वस सिधिगण नायक रेकी ॥१॥
स्वाधिष्ठान विजुरि सन छओ दल
कमल लिङ्ग मुल लस ब-भ-म-य-र-ल ।
सावित्री चतुरानन ततय विराजक रेकी ॥२॥
नाभि मेघ निभ मणिपुर दशदल
ड-ढ-ण-त-थ-द-ध-न-प-फ मण्डित भल ॥
लक्ष्मी सङ नारायन कमल सुभ्राजक रेकी ॥३॥

विद्रुम बरन अनाहत उरगत
क-ख-ग-घ-ङ-च-छ-ज-झ-ञ-ट-ठ शोभित
बारह दल तत गौरिमहेश्वर भ्राजक रेकी ॥४॥

तालु मूल धूमबरन सोलह दल
चक्र विशुद्ध क्रमहि सुर प्रतिदल
प्राण शक्ति सहजीव पद्म तेहि राजक रेकी ॥५॥

भ्रूबिच दुइ दल हिमकर सुबरन
आज्ञाचक्र ह-क्ष दलभूषन
परा शक्ति परमात्मा सहित सुराजक रेकी ॥६॥

सहस्रार हिमबरन सुधामय
वर्णसङ्घ बिसकेर विराजय
ब्रह्मदेव गुरुशक्ति सङ्ग नायक रेकी ॥७॥

छओ सय मूल क्रमहि तिनि दश गुन
सहस शेष लिनि अरपन करु मन
अजपा जप परधान निरन्तर सभ कहँ रेकी ॥८॥

मूलाधार स्वयंभु लिङ्ग कहँ
वेढ़ि विराजथि सार्द्ध त्रिबलितहँ
कुण्डलिनी बर प्रकृति सफल सुख दायिनि रेकी ॥९॥

ब्रह्मनाड़ि बिच बिराक तन्तुनिभ
चित्रिणिपथ चलि क्रमहि तेज शुभ
सकल कमल भय पहुँचलि सुपद सहसदल रेकी ॥१०॥

फिरलि अमृतमयि ओहि पथ पुनि पुनि
गमनागमन यतन दय लहि मुनि
पाब समाधि चरम फल गुरुवर पदरत रेकी ॥११॥

योग युगुति गणनाथ गाबि कह
गुरु उपदेश भक्ति भर हिअ गह
सत चित आनन्द कन्द सहज उर जागत रेकी ॥१२॥

मैथिली तथा हिन्दी

२—प्रकीर्ण

(१)

देव देवी पद

गणपति विनत विनय सुन लीजै० ।
शङ्करिशङ्करतनय दयामय जो भावै सो कीजै ॥ध्रु०॥१॥

मुक्तिपुरी बसि भजन निरन्तर अन्त अन्त जग फेरी
करिअ कृपा शरणागत पालक विघ्नहरण यश तेरी ॥२॥

मन अभिलाष रहौं काशी बसि विकल थक्यो बहु टेरो
मातु पिता ढिग कबहु समय लखि करहु सिफारस मेरी ॥३॥

सिद्धिनाथ एक आस चरन तुअ आरत माथ लगाऊँ
हरहु कलेश पुरहु आशा मम और कहाँ मैं जाऊँ ॥४॥

ऋद्धि-सिद्धि-सेवित-पदपङ्कज छमहुँ हमार ढिठाई
सोमनाथ गणनाथ दास तुअ लेहु अवस अपनाई ॥५॥

(२)

होरी

वृन्दावन खूब मचै होरी ॥ध्रु०॥
छयल छबीले कुँवर साँवरो
सखिअन सङ्ग राधा गोरी ॥१॥

मुसुकि मुसुकि कत गारी गावत
बरबस पकड़ि मलै रोरी ॥२॥

सखिअन घेरि पकड़ि सब इक सङ्ग
दय गुलाल निरखय भोरी ॥३॥

कवि गणनाथ नेहाल निरखि छवि
राधेश्याम अनुपम जोड़ी ॥४॥

(३)

रसिया

रसिया को नारि सजाऊँ री ॥ध्रु०॥
बेंदी भाल नयन युग काजल नकबेसर पहिराऊँ री ॥१॥
दय साड़ी जरतारि केशर रँग पायन पायल बाँधू री ॥२॥
दय अबीर मचि होरि गाय सब डफ के सङ्ग नचाऊँ री ॥३॥
राधा कृष्ण कृष्ण राधा सजि अनुपम रङ्ग जमाऊँ री ॥४॥
युगल चरण अनुराग मधुर रस कवि गणनाथ पिलाऊँ री ॥५॥

(४)

पहाड़ी

ऊधो केहु विधि मन समझै न ।।ध्रु०।।

राजराज सम्पत्ति कहाँ कुबरी प्रेम नवीन ।
ग्राम गोपि जीवन कहाँ पचे प्रेम प्राचीन ।।१।।
मात पिता रोवै सतत तिनहूँ सुधि नहि लेत ।
मोसम फँसी बँलाय में ताहि खबर को लेत ।।२।।
अनुपम छबि सबगुनन के आगर शोभा खानि ।
अबस फँसी उरझी अबौं मोहन सुपुरुष मानि ।।३।।
प्रेम नेम अकपटन के सुदिढ़ जाय सब खोय ।
कतहु बसैं सुख से रहैं मोहि होय सो होय ।।४।।
हीन दशा अबलान तें बनियावै कस बात ।
जानै श्रीगणनाथ जू केहि गत मन दिन रात ।।५।।

(५)

प्रदीकपद

शिव-शिव विनय कौन सुनाऊँ
सबगुणाकर भालचन्द्र विशाल डमरू बजाउ ।
आशुतोष दया सुसागर देह भसम लगाउ ।
सकल शास्त्र स्वरूप योगी गण धरहि जेहि ध्यान ।
गान नृत्यागार जेहि लगि ज्ञान अरू विज्ञान ।

गौरिपति जिनके सुअन गणनाथ और कुमार ।
भगत गण शुभ शरण शंकर भक्ति लीलागार
सुनहु प्रभु गणनाथविनती कृपासिन्धु दयाल ।।

(६)

आयो आनंद फाग—पकड़ि मन बाँधि सिखाऊँ ।।ध्रु०।।
भक्ति अबीर प्रेम रँग भरि भरि बीथिन में बरसाऊँ
गौरीशङ्कर फाग राग रचि गावि मगन उमगाऊँ
गुरुपद भगति बढ़ाऊँ ।।१।।
परमानन्द विनोद मोदमय आनन्द कानन छाऊँ
रागवसन्त धमार बहारहि गौरी हर अब गाऊँ
मनु जनम सफल दिखाऊँ ।।२।।
परा शक्ति छओ चक्र सुपथतें सहस्रार बिलमाऊँ
सुथिर समाधि साधि पर शिव सँग सत चित आनंद गाऊँ
जगत भ्रमजाल नशाऊँ ।।३।।
गावहु लखि गणनाथ भगतिमय गुरुवर पद शिर नाऊँ ।
रजकन पानि सनाथ मोदमय जय जय जय रट लाऊँ ।
नाथ पद चित उरझाऊँ ।।४।।

(७)

जय शिव जप रे रइनि भेल भोर ।।ध्रु०।।
ज्ञान सूर उदयाचल उरलग अनहद पिक कर शोर ।।१।।
मूल अधार जागि जग जननी चित्रिणि पथ पिअ कोर ।।२।।

विकसय हृदय विमल सरसीरुह मन महँ पहुँचत जोर ॥३॥
हुलसि गाव गणनाथ प्रफुल्लित जय जय गुरुपद जोर ॥४॥

(८)

समदर्शनि

जएबह जीव अपन घर एहिबेरि फेरि नहि गरभनिवास ।
भरमि भरमि कत योनि कतेक बेरि पएबह परम विकाश ॥१॥
मणिकर्णिका स्नान सभ दिन कय विश्वनाथ परमेश ।
जगत जननि विश्वेश देवगण दरशन नित अकलेश ॥२॥
गुरुवर शुभ उपदेश निरत नित भजन जपन गुनगान
नैमित्तिक सभ परव करम रत निशि दिन आठो याम ॥३॥
सुथिर बास काशी में पाओल गुरुपद भगति सनाथ ।
परमानन्द विनोद मोदमय गाव हुलसि गणनाथ ॥४॥

(९)

श्री रामचन्द्रक कोवर

सियाराम लस कोवर अनुपम छवि अभिराम ।
नरतन विलस जगत हित हुलस भगति परिनाम ॥१॥
मणिमय भवन सुचित्रित सकल सुखद शृङ्गार
प्रेम परस्पर चुम्बित हुलहि हुलह निरधार ॥२॥
दामिनि नव घन थिर भय राज मनोहर वेश ।
निरखि परम चित हुलसित धन धन मिथिला देश ॥३॥

सुपहु हृदय लगि जगबथि प्राननाथ भेल भोर
दीप मलिन भय जाएत पिक कलरव कर शोर ॥४॥
लक्ष्मीपति वर तुअ पद भगति सुथिर रह नाथ ।
युगल एक हिअ अन्तर माङ प्रणत गणनाथ ॥५॥

(१०)

काशी

आनन्द वनवास० भेलहु कृतारथ बढ़य हुलास ॥ध्रु०॥
मणिकर्णिका स्नान अकलेश० दरशन जगतजननि विश्वेश ॥१॥
काली काशी गाम महेश० बसथि भवानी कुमर गणेश ॥२॥
सोन भूमि तिलतिल परमेश० आठो भैरव छपन गणेश ॥३॥
सुरसरि छोर धनुष पुर बेश० धरम सुशर कलि मारथि उमेश ॥४॥
नाचथि गावथि कवि गणनाथ० राखल निज पुर कयल सनाथ ॥५॥

(११)

शिवजी

विश्वनाथ बाबा बूढ़ ।
बेटा हुनक ढुँढिराज तनिको भल सूढ़ ॥१॥
प्रिया भवानी अपर कुमार मोर सिंह मुस वृष परचार ॥२॥
नन्दी भृङ्गी गण श्रीदेव विजया जयादि जननिपद सेवि ॥३॥
कएल नेहाल दास गणनाथ निज पुर सुथिर वास देल नाथ ॥४॥

(१२)

योग

सुभग श्याम मन मोहन मूरति लस सुकुमार सलोना हे सखि॥
दुलह परम अभिराम ॥ध्रु०॥
रविकुल वीर तनूज वीर वर निरुपम रतन ललाम ॥२॥
बहु विध भूषन शोभ रतनमणि अपरुप शोभाधाम ॥३॥
गुन गन आकर कोन विधि केसक वरनय सिया संग राम ॥४॥
एकटक लोचन युगल लुबुधि रह थिर दामिनि घनश्याम ॥५॥
लक्ष्मीवति हिय सत्वभगति थिर कवि गणनाथ प्रणाम ॥६॥

(१३)

श्रीरामचन्द्रक द्विरागमन काल समदाउनि

सखि हे विनति कहिअ मन लाय
पोसल बहुत यतन सँ धिया हम आइ सून होअ कोर।
सुपुरुष चरन लगाए कृतारथ पुरल मनोरथ मोर॥१॥
कएलहुँ यतन जतेक कए सकलहुँ भेल न मन सन्तोष।
हुनक योग आदर की भय सक छमथि करथि नहि रोष॥२॥
हम की कहब कहय नहि पारिअ हृदय उमड़ि रह पीर।
देशक ओर धिया मोर जाइति केहि विधि उर धर धीर॥३॥
कतेक दिवस पर फेरि कि देखब मुँह विवश हृदय अकुलाय।
गदगद नीर नयन दुहु आकुल मन चञ्चल बिलखाय॥४॥

नेनपन वयस धिया सँ कत विधि होएत दोष कत बेरि।
छमिहथि सकल दया कय मोहि पर रखिहथि कय बड़ चेरि॥५॥
श्रीमिथिलेशमहिषि विनती सुनि गदगद त्रिभुवननाथ।
लक्ष्मीवतिमन सुपथ सुथिर नित माँग प्रणत गणनाथ॥६॥

(१४)

गणपति विनय सुनिअ करुणामय हरिअ सकल दुख मोर।
भव भ्रम श्रम आकुल हम धयलहुँ चरणकमल युग तोर॥१॥
भक्तप्रवर मिथिलेश कृपातहँ अनुचरगण "अविशेश।
वरष वरष दरशन तुअ पावथि हरिअन्हु समक कलेश॥२॥
मातु पिता लग चललहुँ अपने आज विकल सभलोक।
अभ सङ्ग आएब पुनि लगले चित धैरज हर शोक॥३॥
गावथि नत गणनाथ जोरि कर गौरीतनय गणेश।
पूरिअ सकल मनोरथ राखिअ श्रीरमेश मिथिलेश॥४॥

(१५)

जय सावित्रिसहित चतुरानन
मूल त्रिदेव मध्य एक ई छथि आदि देव मनभाओन॥
लाल वरन आनन सुचारि भुज वेद कमण्डल धारन।
सकल चराचर सृष्टि भार युत हंस विमल वर वाहन॥१॥
वेद माय सहचरि स्वदेह धय अनुपम शोभा सारन।
आगम निगम सकल यश गावथि भक्त हृदय दुखहारन॥२॥

मूलप्रकृति सँग पुरुष पितामह शोभा परम सोहाओन ।
वरनि सकथि के कवि त्रिभुवन महँ सुर मुनि धरथि सुध्यानन ॥३॥
माँगथि कवि गणनाथ जोरि कर पूरित सभ अभिलाषन ।
दारा सुअन सहित मिथिलापति श्रीरमेशचिरजीवन ॥४॥

(१६)

जय जय देव देव नटराज ॥ध्रु०॥
कनकाञ्चित मणिपीठ उपर भल त्रिभुवन जननि विराज ॥
वाणी वीणा वेणु चतुरानन हरि मृदङ्ग श्रीगान ।
सुरपतिकर मञ्जीर मधुर धुनि अनुपम छवि परमान ॥१॥
आशुतोष सङ्गीत पयोनिधि डक्का देल बजाय ।
शब्द शास्त्र उत्पत्ति मूल चौदह सूत्र कहाय ॥२॥
सकल अङ्ग सङ्गीत प्रफुल्लित आनन्दशोभासार ।
द्वैताद्वैत वेकत दरसाओल ऋषिमुनि मगन विचार ॥३॥
पूरित सकल मनोरथ माँगथि कविगणनाथ महेश ।
दारासुअनसहित चिर जीवथु श्री रमेश मिथिलेश ॥४॥

(१७)

किअ हे हरल मोर नाह शङ्कर ॥ध्रु०॥
कि करब कतय जाएब करुणामय ।
कौन विधि हमर निबाह ॥१॥
कौन अपराध पड़ल नहि जानिअ ।
हम पड़ि गेलहुँ अथाह ॥२॥

अहरन हरन ख्यात करुणानिधि
हरिअ सकल उर दाह ॥३॥
कवि गणनाथ उपाय आओर नहि
केवल तुअ पद छाह ॥४॥

(१८)

साजन करिअ यतन ।
गुरु अनुगत होअ सतत मन ॥१॥
बाहर जगत अनुसरन करन ।
अन्तर निरत तेहि पद अनुखन ॥२॥
परव्यसनिनिघर काजहु मगन ।
हिअ पिअ सहित निरन्तर मन ॥३॥
नाना योनि भमि पओलह मल तन ।
सफल करह दुरलभ नरतन ॥४॥
कवि गणनाथ गुरुदेव कलपन ।
आगम निगम सार अमूल्यरतन ॥५॥

(२०)

होरी

बिच कैलाश मुदित गौरी हर होरी मचाय ॥ध्रु०॥
एक दिश विजयाजयादिक सखि गण
ठाढ़ि अबिर रङ्ग लाय ललना ।
नन्दी भृङ्गी आदि अपर दिश
सज्जित तेहि विधि जाय ॥१॥

मध्य विराजित पारवती शिव
आनन्द शोभा सार।
वरनि सकथि के कवि त्रिभुवन बिच
अनुपम छवि भण्डार ॥२॥

मणिमय पिचकारी चल दुहु दिश
रङ्गतरङ्ग उठाय ।
भारति धार कुतारथ नाचथि
जननि जनक पद पाय ॥३॥

भोरहि भोर अबीर उड़ाओल
नभ थल लालहि लाल।
गावथि नाचथि सबहि मोदमय
बाजय बहु विध ताल ॥४॥

विजया शिवहिँ नहाय रङ्गसं
अबिर देल बरषाय ।
हँसइत ईश प्रिया मुख हेरथि
निरखि उमा मुसुकाय ॥५॥

गावथि कवि गणनाथ जोरि कर
अरज सुनिय प्रभु मोर।
तुअ पद कमल निरन्तर रतमति
हेरिय लोचन कोर ॥६॥

आमक प्रति (१८६० ईसवी)

फल हे तेजह किएक समाज ॥ध्रु०॥
तोहरहिँ बलें किछु गनल न वचनिच छोड़ल गेहक काज।
तुअ गुण अबुधि छुबुध मन होएत ई तोहि कत गोट लाज ॥
मन अभिलाष लाख हम धयलहुँ यतनहि हृदय नुकाय।
उमड़ि उमड़ि से मगन ओलहि की एहन कठिन हिअ हाय ॥
कोमल सरस विदित त्रिभुवन तों अकपट तथिहुँ विशेष।
प्रकृत बुझल तुअ गरल भरल हा सरल मनोहर वेष ॥
गदगद स्वर पुलकित तन थरथर आब कहल नहि जाय।
भन गणनाथ उदास कहब कत थकलहुँ बहुत बुझाय ॥

मैथिली

३—शृङ्गार

(१)

लगनी

गगन उमड़ि घन बरिसय दमकय दामिनि रे।
हुनि विनु केहि विधि उबरब-साओन यामिनि रे॥
फुलल कदम वन मारुत विलसि विलसि बहु रे।
विषमय अनल ज्वाल सम मोर तन मन दह रे॥
चहु दिश दादुल आकुल इतउत शिखि-रव रे।
कर उनमूलित धीर पीर अति कि करब रे।
एहि अवसर पिअ आएल अङ्कम लाओल रे।
कवि गणनाथ मुदितमन पद रचि गाओल रे॥

(२)

उमड़ल गगन सघन घन झहरय दामिनि दमकि दोगुन हिअ हहरय० साओन धीरनसाओन विनु मनभाओन की।

चहुदिश दादुल आकुल कर धुनि० झिङ्गुर झनक मयूर शबद सुनि० विरह ज्वाल त्रिगुनित भय धधकय छन छन रे की॥
गरल अशम यत दगध करय तन० हिमकर सुमरन तकर कतेक गुन० अधिक विरह उपचय कर कोनविधि उबरब रे की।-
चानन अरु घनसार कमल बन० सुनि सुनि कि कहब क्रूर होअ मन० सकल जगत अनहित शिव शिव तनि विनु रेकी॥
आएल पहु गणनाथ कहल सखि० अति अकुलाय ठाढ़ि कत कत भखि० स्वर गदगद तन थरथर.पिअ गर लागलि रेकी॥

(३)

चित मोर रहल लोभाय तोहर संग रखिहह यतन लगाए।
निज मन सङ्ग नुकबिहह उरविच प्रेम अमिअरस लाय॥
सुनह सकल गुणआगरि नागरि कविगणनाथ प्रमान।
तुरित आवि निज बचन अमिअ सिचि करह हमर जिवदान॥

(४)

पाओस जलद घमंड॥ हे सखि
दादुल मोर उदण्ड। पहु छथि पर वश मोर। हे सखि
आएल जीवन ओर। सजल पवन बह घोर। हे सखि
मोर लेखे हुतवह जोर। मनसिज शर मन घोर। हे सखि
निरदय नन्दकिशोर। कवि गणनाथ अमन्द। हे सखि
पड़लहु प्रेमक फन्द॥

(६)

साजनि एहन उचित नहि तोही ।
भावी तोहर वियोग रोग दुख दुरदशा तेजलह मोही ॥
कश्रोन अपराध पड़ल मोर सुन्दरि जें तेजलहु मोर संग ।
पाश्रोस एहन उचित नहि साजनि भेल मनोरथभंग ॥
गरजय गगन सघन घन बन बन मोर रवय घमसान ।
तुश्र बिनु श्रँतुछन परम विकल मन सतत मदन हन बान ॥

(७)

लगनी

किछु नहि थिर होश्र कोन बिधि कि कहब
हृदय कुसुमशर जरजर कि करब ।
केवल तुश्र गुन श्रास पास लगि
थर थर रेकी ॥१॥

सहजहि उपजल नेह परम प्रिय
वेकत परस्पर सुखद उभय हिय ।
परवश दुरलभ मिलन धीर नहि
डर धर रेकी ॥२॥

तुश्र अनुपम छवि लुबुधि मुगुध मन
रसिक रहल केहु बिधिवस केहु खन ।
असमञ्जस अभिलाष लाख कत
बिध कर रेकी ॥३॥

गहि कर मुख अङ्कम भरि भरि
चुमि मुख नयन कपोल कोर करि ।
निधुवन केलि विनोद मोदमय
लगि गर रेकी ॥४॥

सब गुन खानि विवेक विदित सुधि
लोचन कोर चोर चितवन विधि ।
कह गणनाथ कुवारथ अनुचर
कविवर रेकी ॥५॥

(८)

अवधि बितल कत युग गेल पहु कत के कहत रे ।
छन छन छिन तन कत दिन एहि विधि निबहत रे ॥
नेह गरब यत भुललिह हरिवर लगि लगि रे ।
दहय विरह तसु सुमरन बिष तत पगि पगि रे ॥
नेह सरस उर यन्त्रित विरह श्राँच बश रे ।
नयन युगल पथ चुवइछ मन मोर दुरदश रे ॥
कतहु दुसह दुख थिर नहि धैरज साधिश्र रे ।
भन गणनाथ रसिक बर मन अवधारिश्र रे ॥

(९)

तिरहुति

तुश्र नखरुचि परतर नहि पाय ।
लाज चान गेल जलद छपाय ॥१॥

चिकुर निकर लखि जलद पिशङ्ग ।
लोचन लोल कमल वलभङ्ग ॥२॥
वचन मधुर सुनि कोकिल गेल ।
सिखइत केकी अनुचर भेल ॥३॥
कुचयुग निरखि कांचपुतु बेल ।
सुखछबि पुरवधु घोघट लेल ॥४॥
तुअ गुण लुबुधि गेल मन मोर ।
रखिहह यतन हेरि दृग कोर ॥५॥
सब गुण खानि जानि होअ आस ।
कवि गणनाथ बनल तुअ दास ॥६॥

(१०)

ओ की सखि सखि कओन विधि राखब धीर ।
समय बसन्त कन्त परदेश वश काम हनय कसि तीर ।
कोकिल कुहुकि विथस जिव करइछ सतत नयन बह नीर ।
दिशदिशसँ मन्मथ शर जर जर थर थर करय शरीर ।
दगध करय पुनु चान किरण तन दिन दिन तन हो छीन ।
दिन दिन पीर अधिकतर होइछ मीन जेहन जलहीन ॥
आब की करब सखि प्राण वैरि भेल एहन करम मोर मन्द ।
नहि अछि एक उपाय हमर पुनि परलहु कामक फन्द ।
धरिअ धीर अति त्वरित मिलत पहु नहि रह समय समान ।
कवि गणनाथक वचन सुभग सुनि नहि कर प्राण पयान ॥

(११)

अतुल सिनेह दुहुक मन मनोरथ दुहु मन अति उद्वेग ।
एकहि नगर बसि दरसन दुरलभ दुस्सह मदनक बेग ॥
दुहु सखि अनुछन रहै बेहाल ।
सतत मदन शर थकित विकल मन पसरल विरहक जाल ॥
पुरुब क रोग वियोग छुटल पुनि योग भोग नहि होए ।
हृदय उसास बिखिन मन छिन तन अनुछन दुहु रह रोए ॥
विह व्यवहार अपार सुकवि गणनाथ एतहि परमान ।
बेकत दुहुक मन मिलन मनोरथ विपरित तकर निदान ॥

(१२)

एखनुक उचित कि चित्त उदास ।
समय वसन्त रङ्ग अनुरञ्जित कमलिनि मधुप विलास ॥
पुरुब क सहज सिनेह सुसञ्चित जिउ मह बढ़ल उमङ्ग ।
कओन अपराध हमर भेल बाधक कयलक ई मन भङ्ग ॥
दछिण पवन भ्रमर अरु कोकिल उपवन पुहुप समाज ।
पचशर करथि बहुत विधि गञ्जन तोहि विमुख लखि आज ।
स्वाती विन्दु सिनेह तोहर हरि चातकि हमर पराण ।
एक बेरि वचन अमिअ लय सीचिअ फेरि धरब वरु मान ।
हाय कहब कत सकल बेरथ भेल आब कि करिअ विधान ॥
भन गणनाथ अथिर पै सजनी सुपुरुष मान प्रमान ॥

(१३)

लगनी

प्रेम मनहि मन उमड़ नेह घन कतगुन छन छन सजनी
होत न धैरज साधन रेकी ।
आस डोर लगि गुन गन रस पगि निश बासर जगि
सजनी अनुपम प्रेम सुसाधन रेकी ।
उमगि अंकभरि लाय कोर करि अधर चूमि हेरि सजनी
निरुपम सुख अवगाहन रेकी ।
दुरजन किछु कर सुजन सुपथ पर आस पुरत हर सजनी
तोर दया बिरधारन रेकी ।
श्रोल रमेश्वरसिंह नृपतिवर निज पद रत सजनी सुनि
गणनाथ पुकारन रेकी ।

हिन्दी

भक्ति तथा रसान्तर

सवैया प्रभृति

देशी पुरबी—श्रीभगवतीक

(१)

एक अवलम्ब अम्ब-पद-पङ्कज गहु मन मूढ़ दिवाना रे ।।ध्रु०।।
यह संसार असार जलधिमहँ नाना योनि समाना रे ।
अतुलन उवधुव दुख गण आकुल विषय मोह लपटाना रे ।।१।।
दुरलभ नरतन पाय चेत करु अबहुँ अजब भरमाना रे ।
मानहु सीख तेजि हठ मूरख नाहक जन्म सिराना रे ।।२।।
ब्रह्मा हरि अरु रुद्र भजैं जेहि सुमरि सुमरि पुलकाना रे ।
और उधार उपाय कोउ नहिं आगम निगम बखाना रे ।।३।।
कवि गणनाथ बिचार सार यह इतर व्यसन बिसराना रे ।
भक्तिभाव उर लाय जतन सें अम्ब अम्ब गोहराना रे ।।४।।

(२)

श्यामाचरणारविन्द भजि ले मन मेरा ।।ध्रु०।।
ब्रह्मादिक सकल देव ऋषि मुनि गण जाहि सेव
विविध योनि भ्रमण फन्द पैहौं छुटकारा ।।१।।

भक्तिभाव हृदय धारि गुण गण रसना पुकारि
आनन्दमय कोश जागि पावहु सुख सारा ॥२॥
भव भ्रम श्रम थकित धीर होइहें अविनाशि थीर
करुणामयि जगत जननि कहि कहि निस्तारा ॥३॥
मानहु गणनाथ सीख गुरुवर उपदेश भीख
मानव तन सफल होय हैहै निस्तारा ॥४॥

(३)

चैत—श्रीभगवतीक

तुश्र पद मति सुश्र राजे तारे भीख हमारे ॥ध्रु०॥
सारथ नरतन होए चरन लगि, गुरु उपदेश सुहावै ॥१॥
फँसि संसार असार जाल महँ श्रौर नाहिं उरझावै ॥२॥
वृथा रैन दिन इत उत भटकत तोहि लगि आनन्द गावै ॥३॥
कवि गणनाथ जोरि कर माँगत भक्तिभाव उर लावै ॥४॥

(४)

जननी चरनमा हो रामा गहु मनुश्रा रे ॥ध्रु०॥
भव भ्रम शमन दमन षट् रिपु गन सहज खरनमा हो रामा ॥१॥
करुनागार उदार दयानिधि अनुप रतनमा हो रामा ॥२॥
विमल निरति अनुराग निरन्तर सहज भजनमा हो रामा ॥३॥
हठ तजि गणनाथ उबारहु मानि वचनमा हो रामा ॥४॥

(५)

कजरी—भगवतीक

जगत जननि एक बिनय सुनाऊँ रामा
रामा तुश्र पद मति रति लाऊँ रे हरी ॥१॥
पद पद विपद जगत दरशावै रामा
रामा तुश्र पद गहि सुख पाऊँ रे हरी ॥२॥
विविध मनोरथ नित उर जागै रामा
रामा कत कत गरज गिनाऊँ रे हरी ॥३॥
सतत अथिरमति निज रति लाऊँ रामा
होंहू गणनाथ गुन गाऊँ रे हरी ॥४॥

(६)

मनुश्रा भवनिधि एक तरनिश्राँ गहु जग जननि चरनमा ना ॥१॥
भगति जुगुति तन मन धन सब विधि धरहु शरनमा ना ॥२॥
अनुपम अमर मौलि मणि नूपुर ललित बदन मा ना ॥३॥
अनुखन रहु गणनाथ सीख सुनि रत दरशन मा ना ॥४॥

(७)

सजल सघन नव घन छवि छाजै रामा
रामा बाल शशि भाल भल राजै रे हरी ॥१॥
तीन नयन भुज चारि सुहावै रामा
रामा अभय सुबर मुसकाती रे हरी ॥२॥

गगन वसन शिव उर पद राजै रामा
राम शव कर किङ्किणि विराजै रे हरी ॥३॥
अनुखन मति रत चरन रतनमा रामा
रामा कवि गणनाथ वर माँगय रे हरी ॥४॥

(८)

अतिसी-कुसुम वरन तन राजै रामा
रामा परम ललित छवि छाजै रे हरी ॥१॥
दुष्टदलनि दुखशमनि भवानी रामा
सब फल दायिनि मृड़ानी रे हरी ॥२॥
सब तजि जगतजननि गुन गाओ रामा
भव-भ्रम जाल छुटि पाओ रे हरी ॥३॥
कवि गणनाथ कर जोरि नत माँगय रामा
रामा सुथिर होय मन मानय रे हरी ॥४॥

(९)

आज सुदिन जगजननी आओन की है बधाई ना ॥१॥
भवविधि तजि दश दिन लगि उत्सव आनन्द छाई ना ॥२॥
निशि दिन दरशन परम शुभद छवि करम बिकाई ना ॥३॥
सुमति एकरद सुथिर करिअ गणनाथ ढिठाई ना ॥४॥

(१०)

विनती मेरी तुअ पद रति थिर पाऊँ ॥ध्रु०॥
करुणामयि छुटि जगत जाल सँ तेरो गुनगन गाऊँ ॥१॥

पूजन भजन मनन जप अनुछन आनन्द कोष जगाऊँ ॥२॥
मानव देह कृतारथ निशि दिन तुअ सेवा मन लाऊँ ॥३॥
गाव दास गणनाथ जोड़ि कर तुअ पद माथ लगाऊँ ॥४॥

(११)

समझ मन कोउ नहीं अपना ॥ध्रु०॥
माता पिता सुता सुत वनिता सबको धुनि अपना ॥१॥
यह दुनिया है अजब तमाशा सब कुछ बस सपना ॥२॥
अबहुँ चेति जगजननि श्रद्धा भज अम्ब अम्ब रटना ॥३॥
श्री गुरुचरण शरण गणनाथहि मूलमन्त्र जपना ॥४॥

(१२)

हमारी लेहु खबर जगदम्ब ॥ध्रु०॥
दया करहु जगदीश्वरि माता बहुत विकल अब अम्ब ।
करुणामयि अब छमहु दोष सब दय पद-पल्लव छाँह ।
तुम्हरे कृपा बिना कहँ आवे ज्ञान विमल उर माँह ॥
ना जानूँ कत कत हम भटक्यो कित कित स्मरण न आवे ।
सहि न जाय अब वेगि उबारहु जाते चित सुख पावे ।
जप तप ध्यान गान गुण कीर्तन तेरोहु कृपा ते होय ।
अम्ब अम्ब मति देरि लगावहु बैठे सब सुख खोय ॥
परब्रह्म परमेश्वरि माई केहि विधि विनति सुनाऊँ ।
करहु कृतारथ दरसन दय मोहि चरनन माथ लगाऊँ ॥
कवि गणनाथ जोरि करि माँगत नृप वर श्रीलरमेश ।
चिर जीवहि युग दार सुवन सँग तुअ पद रत मिथिलेश ॥

(१३)

मैश्रा चरन शरन ॥ध्रु०॥
हेरहु कृपामयि सदय नयन ॥
और कुछ थिर नहिं सकल भुवन
एक तुही सत चित आनन्द सघन ।
निर अवलम्ब मोर एकही यतन
अम्ब अम्ब अम्ब गदगद विलपन ।
होवे रति तुअ पद सतत मगन
जप तप ध्यान गुनगान अनुछन ।
माँगे गणनाथ मिथिलेश पुर मन
थिर मति निश दिन तुअ चरनन ॥

(१४)

पुकारे भई देर जननी हेरो मेरी ओर ॥ध्रु०॥
चित रत तेरे पाद मेरी जप तप पूजन ध्यान ।
बना रहूँ बस तेरोई री मन बच कर्म समान ॥
मन थिर तुअ पद कञ्ज मेरी सेवा कर परमान ।
रसना कहै अरु कान सुनै री तेरोई गुनगान ॥
जानूँ नहीं कुछ क्या करूँ री अटपट गदगद बैन ।
पुलक भरे तन बरस रहे री भगति सलिल युग नैन ॥
निर अवलम्ब शरण आयो री अपनावहु जगदम्ब ।
और न कुछ मोहिं चाहिए री तुअ पद एक अवलम्ब ॥

माँगे कवि गणनाथ देहु री पदरत मिथिला नाह ।
श्रीलरमेश्वरसिंह नृप री निज-पद-पल्लव-छाँह ॥

(१५)

झूमरि

जगजननि चरन अनुरागे रहो ना ॥ध्रु०॥
फिरहु क्यों इत उत और सकल भ्रम त्यागे रहो ना ।
अनुखन तोहि रति भगति विभव गति बागे रहो ना
तसु रज रञ्जित आनन्द हुलास भले जागे रहो ना ।
मानो यह शुभ सिख अवश परम सुख लागे रहो ना
माँगे गणनाथ मिथिलेश तुअ पद युग रागे रहो ना ॥

(१६)

तेरे चरनन के निज दास ॥ध्रु०॥
बना रहूँ जगदम्ब अनुछण यही एक मोर आस ।
सत चित आनन्द ब्रह्म दयामयि भक्तन हित परमान
धय कत रूप व्यक्त कित कित तू श्यामा रूप प्रधान ।
मरम को जान ज्ञान तेहि जेहि पर तुअ अनुकंपा होए
दया समुद्र हेरु करुणामयि और जो होय सो होए ।
क्या मैं करूँ कौन विधि बनत न कहत जगत आधार
सब जानो तुम सुचिर भगति मोर रहै न और विचार ।
तुअ पद युगल सरोरुह मधुलिह होऊँ तोर दरबार
बिसरि दोष सब पुरहु मनोरथ भजौं सतत निरधार ।

श्रीलरमेश्वरसिंह महीपति मिथिलापति जगदम्ब
माँगे प्रणत गणनाथ जोरि कर तुअ पद युग अवलम्ब ॥

(१७)

जय भक्तरञ्जनि विपदभञ्जनि वदन दुति-
जित नीलकञ्जनि धरम रिपुगन सतत गञ्जनि
नयनखञ्जनि हे।
जय सच्चिदानन्दरूपधारिनि कुण्डली छौ चक्र चारिनि
सहस्रारबिलासकारिनि सर्वदायिनि हे ॥
जय ब्रह्मघन अभिरामदामिनि दासजनहितरूपधारिनि
सहज दानवदलविनाशिनि जगतजालिनि हे।
जय जन्मथितिलयचक्रचारिनि सुजनतनमनदुरितहारिनि
कठिन अघगनपिण्डदारिनि जगततारिनि हे।
गणनाथ माँगत मुण्डमालिनि देहु पदरति विन्ध्यवासिनि
श्री रमेश्वरसिंह पालिनि दयाशालिनि हे ॥

(१८)

रहूँ रत तुअ चरनन चित लाइ।
निश दिन जगतजननि करुणामयि दीजै सब सुख दाइ ॥ध्रु०॥
सर्वाधार तिहारो गुनगन बरनि सके को माइ।
परब्रह्म कोउ पार पाव कस नेति नेति श्रुति गाइ ॥
तुअ पद युगल विमल सरसीरुह रजकन शिर भल छाइ।
निरखि रूप तुअ अवस कृतारथ मैया छमहु दिठाइ ॥

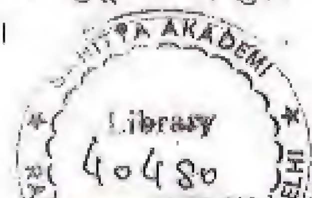
सुथिर भगति हिय गहै निरन्तर इत उत नहिं फँसि जाइ।
जप तप ध्यान गान गुन तेरो मगन अकथ सुख पाइ ॥
ऐसो रूप अनूप नयन पथ कबहुँ कबहुँ यश पाऊँ।
कीजै दया मनोरथ पूरै नित तुअ गुन गन गाऊँ ॥
श्रीलरमेश्वरसिंह बहादुर महाराजअधिराज।
मिथिलापति गणनाथ विनति यह तुअ पद रतमति काज ॥

(१९)

चरनन में मन लोभाय जगदम्ब।
रहय निरत निश दिन अनुछन अम्ब ॥ध्रु०॥
तेरो यह रूप अपरूप रहै थिर हिय।
करो दया जननि सुशीतल करो री जिय ॥
लम्बित चिकुर शशि भाल तिनि नैन कस।
शवकर किङ्किणी महेश पर पद लस ॥
अभय सुवर असि मुण्ड चारो कर भल।
शव मुण्डमाल कच-कच शुचि शोभ गल ॥
मम परिमान घनदामिनि सुथिर छवि।
श्री मिथिलेश हेरो माँगे गणनाथ कवि ॥

(२०)

जय जय ललित छवि मेघदामिनि अथित कच कच मुण्ड-
मालिनि चरनचुम्बित चिकुरजालिनि सकलसुरगणपालिके।
जय तारिणी सुन्दरी भुवना भैरवी छिन्ना धुमा बगलामुखी
मातङ्गि कमला तुही सब जगजालिके।



जय सूर्य चन्द्राग्नि त्रिनयना शव करावलि ललितरसना चरण-
तल शिव गगनवसना चराचरभवचालिके ।
जय अभय वर असिमुण्डधारिणि चारिभुज अवपिण्डदारिणि
कान शवकुण्डल सुहासिनि जयति दक्षिणकालिके ।
जय श्री रमेश्वरसिंह मिथिलापति चरण तुअ भक्ति विमला
दीजिए गणनाथ अमला विनति जय विधुभालिके ॥

(२१)

जय जय जय अम्बे जय जय जगदम्बे ।
जय ब्रह्मा हरि हर प्रमुख देव सब अवलम्बे ॥
शिववर पद ललिते जय शिर विधु कलिते ।
मुण्डमाल गर नयन तीन श्रुति भुज वलिते ॥
मुण्डखड्ग वर अभये चारो कर विभवे ।
चिकुर जाल पद लम्बित जय जगत प्रभवे ॥
शिव कर गण रसने शोभित वर जघने ।
हेरो दया करि अम्बे जय अम्बरवसने ॥
कवि गणनाथ पुकारे पद रति निरधारे ।
श्रीलरमेश्वर मिथिलापति सह परिवारे ॥

(२२)

दादरा

जगतारिनि चरन उर लाओ वृथा इत उत फिर रे ।
इनहीं से सब सृष्टि चराचर इनहीं में लय पाओ । वृथा० ।
ब्रह्मा विष्णु महेश देवगन नित रत चित्त दय गाओ । वृथा० ॥

करो निशदिन गुनगान ध्यान जप भव भ्रम तें तरि जाओ ।
वृथा० ॥
कवि गणनाथ विनति तुअ पद रति श्री मिथिलेश पुराओ ।
वृथा० ॥

(२३)

लावै निरति मति जननि चरन मा
आनन्दकोष मगन मनु जपरत भगति भाव गुन यतनमा ।
पुलक होत गदगद स्वर बरसत नयन युगल अम्ब अम्ब
विलपनमा ।
शरणागत कल्पद्रुम भजु भजु सब सुखदायी अनुप रतनमा ।
कवि गणनाथ विनति मिथिलेशहिं दीजै पद पल्लव छाह
शरनमा ॥

(२४)

सखि री निपट गवाँर गोपाल ।
वे पावस परदेश गमैहें बहुरि फुलैहें गाल ॥
टेढ़ी छवि टेढ़ो चितवन मन टेढ़ी सकल प्रचार ।
छल बल से मोहि नेह रज्जु लेवान्हि दयो जञ्जाल ॥
वे चितवनि वे भौंह मरोरनि वे मुसुकनि छवि भोर ।
वे बंशी की मधुर मधुर धुनि चित कर चञ्चल घोर ॥
पहिले जानि परी कछु नाहीं चूकि फँसी मैं फंद
अब कैसे निकसूँ ना जानू गई आस मकरन्द ।

हमें निकासि चित्त तें वे तो भागे री ब्रजनाथ ।
मेरे मन ते भागि सकै नहिं जाने श्री गणनाथ ॥

(२५)

कत दुख तो हरहि बिनु हरि आहि
कत छन कानि कानि हम खेपब कत छन रहब बताहि ॥
मदन नरेश साजि दल आएल चमकत तड़ित निशान ।
दादुल झिंगुर पपीहा शिखिरव रण बाजन घमसान
गरजै गगन महाभट जलधर नीर तीर बरिसाय ।
ऊठि उझकि पथ देखि तोहर हम मुरछि खसिअ अकुलाय ॥
अतुलन मदन विशिख जिव जरजर कतनहु नहि अवकाश ।
तुअ गुन लुबुधि पराभव कत गोट भय शक की परकाश ॥
एत दुख दापहुँ जों जिव जाइत तौं छल बड़ अवसान ।
एहि संसार अथिर पै सुखदुख कवि गणनाथ प्रमान ॥

(२६)

ऐसी लागी रे लगनिआ नाहिं न छूटै रे
अपरूप रूप अनूपम छवि लखि सुखमा सिन्धु सकल गुण
गण परि सब तजि तुअ लगि प्रान कामशर कूटै रे ॥
सब गुण खानि दयामयि कामिनि मोर हियमेघविकाशिनि
दामिनि लेहु उबारि कृपा करि जिअ मोर छूटै रे ।
हेरहु नेह दिठि लेहु कोर करि चुमहु बदन मोर अङ्कम भरि
भरि बहु विधि केलि विनोद विना हिअ टूटै रे ।

माँगें कवि गणनाथ जोरि कर श्रीलक्ष्मेश्वरसिंह नृपतिवर
चिर जीविहिं मिथिलेश सकल सुख लूटैं रे ॥

(२७)

ज्ञान ते न ज्ञेय उपमेय उपमानि ते न ध्यान
ते न ध्येय उपमेय अनुमाने है ।
ज्ञाता को कहावै को प्रमाता ताहि पावै कौन
ध्याता ताहि ध्यावै जे विधाताऊ न जाने है ।
अव्यय अखण्ड कोटि ब्रह्माण्ड जामें मण्डल
मयूख के पियूख सरसाने है ।
ब्रह्मानन्दमयते अनामय अभय अम्ब
तेरे पद मेरे अवलम्ब ठहराने है ॥

(२८)

मन्द मन्द बहत सुगंधचुते पौन नभ
घेरि चहुँ ओर घनघोर घहरात है ।
प्राणनाथ मेरो निरमोही परदेश भोर
विरह-विथा ते चित्त अति अकुलात है ।
कैसे धरों धीर शठ केवल विरहिणी के
मारवे के निशान मीनकेतन फहरात है ।
अब ना बचूँगी आली ब्याली होय आय बैठो
अबला विनाशकारी कालीबरसात है ॥

(२९)

अब ही कोकिला की कूक हूक हिअ हारी अरी
अब ही चहूँ ओर घनघोर उमड़ायो हैं ।
छिन ही में वसन्त अरु ग्रीषम के अन्त भये
छिन ही में पावस समाज बढ़ि धायो हैं ।
हाय बिरहागिन में हुकरत रहूँगी
अबलौंहूँ प्रान प्यारे हिअ दरद न आयो हैं ।।
जानी जानी सकल प्रपंच दुख देन अरी
बाजीगर बसन्त आज पावस सजि आयो हैं ।।

(३०)

हाय कोकिला तो मञ्जु गुञ्जन पै बैठि बोलै
कूक वाकी फूक ज्वाला विरह अनन्त की ।
गूजें भौर मैनमंत्र गूँजें ठौर ठौर अजों
करत प्रपंच मनो मेरे सुख अन्त की ।
केतेहूँ सताई दैन रोस जिअ लटी
अब तो रचो है ढंग मारन प्रबन्ध की ।
हाय प्रानप्यारी मुखचंद्र के चकोर मेरो
अन्त करि डारत यह पंचमी वसन्त को ।।

(३१)

चपला-सी चमक दुति इन्दुमदहारी नयन
काजर सँवारी भले भूषण भरे अंग में ।

दशन वसन लाली दीन्हीं बन्धूक लजाय नयन
खंजन हराई रति जीतो रूप रंग में ।
सारी नील रंजित केश चूमत नितम्ब आज
झूलत हिडोले चित्त चुम्बित सुजंग में ।
मन्द मुसकाती चित्त चंचल चुराती देखी
तेरी प्राणप्यारी अजों मदन उमंग में ।।

(३२)

पूरन इन्दु कला छवि ऐन अनंग प्रपंच तरंग बढ़ाई ।
कोकिल कंठ मनोहर अंग झुके भ्रूभंग हिया ललचाई ।
रिसियाय कभी मुसुकाय कभी लरजाय लजाय तिया तरसाई ।
मनमन्दिर पैठि भुलाय हमें चित लयई गयी दुक नयन झुकाई ।।

(३३)

एक कामिनियाँ गजगामिनियाँ मनो दामिनियाँ मुसकाति खरी ।
कमला बिमला तट पै सरसा सिर पै गगरी कर से पकरी ।।
नयना कजला पिठ वेणी लसै छवि भूली भुलायें न जात अरी ।
दरसाय हिया ललचाय जिया लरजाय तिया चित चोरि करी ।।

(३४)

जाय परदेस भोर बैठे सुधि मेरी भूलि
केते हूँ करूँ पै धीर नेकु नाहिं मन में ।
जतन अनेक हूँ पै बौरी बिलखाती फिरूँ
लोक लाज त्यागि इतय उतय बन बन में ।

थाई समय आय प्राणप्यारे भरि अंक लाय
बोले मुख चूमि प्यारी कुंजबन घन में।
उचकि निहारो ललचाय लपटाय वारि
नयन बरसाय रूठि बैठी एक छन में॥

(३५)

उमड़ी घुमड़ी घन घेरि घटा छवि दामिनि की ललचाय रही।
दादुर मोर अनोर करैं बिनु प्यारे तुम्हें नहिं जाय सही।
मनमोहन आवें अरी सजनी एक औचक में सखि आय कही।
सुनि चौंकि चकी उझकी हरखाय उठी मुसकाय लजाय रही॥

(३६)

गरजै चहुँओर घनघोर अति जोर सोर
वामें छवि दामिनी की निरखत सुहावनों।
झहरि झहरि बरसत करत सरस रैनि जेठहुँ की
पावस की अमल फैलि दम्पति सुखावनो।
सकुची गर लागि मूँदि नयन रतनारे दोऊ
बार बार कहति रैनि परम डरावनों।
प्यारे कहैं प्यारी आयो पावस महाराज आज
सकल तपावन ग्रीष्म किंकर सतावनों॥

(३७)

क्यों तू फिरै अँठिलात भटू सिख मानि लै री पन जात सरो।
यह यौवन की सुधि नाहिं कछू पथ प्रेम अमोल में पाय धरो।
भली मोहनी मूरत हाय त्रिभंग में नेह तरंग बढ़ायो करो।
उर लागि ले री यदुनन्दन* के यह पाले पतिव्रत ताखे धरो॥

(३८)

साँझ की समैया बन भटक रही थी मैं तो
कानन सुहाई मृदु बाँसरी की तान री।
सरस त्रिभंग अंग साँवरो बिहारी बीर
परम प्रवीन पथ नेह नन्दलाल री।
वा दिना रिसाई हाय गारी कत मोहिं दई
भनक न भाई बाहि लाल गुनगान री।
आज लखि पाई ढिग लाल मुसकात लखि
साँकरी गली में प्यारी हाँ करी न ना करी॥

(३९)

चलबै दिन आय कहीं अँखियाँ,
भरि जाहु नहीं फिर ये दिन होहियैं।
कह आज की जो मुख चूम दई,
बिति जानि बिना मोहि रोवत होहियैं।

---

*सर्वसीसाग्राम निवासी मित्रवर यदुनन्दन ठाकुर के कहने से यह समस्यापूर्ति हुई थी। इसी से श्लिष्टरूपेण उनके नाम का निवेश किया गया।

साजि सिंगार अकेली नवेली
अटारिन तें पथ हेरति होइहैं।
राजा विदा करि दीजे हमें,
घर नागरि फाग बुलावति होइहैं।

(४०)

मैथिल श्रोत्रिय उच्च वंश तप नेम कृतारथ।
धरानाथजी जनक जिन्हे एक धर्म पदारथ॥
काशी तजो शरीर रामकाशी जो जननी।
धर्ममूर्ति तन तजो प्रयागहि विमल सुकरनी॥
इनके सुत गणनाथ कवि जगदम्बापदकमलरत।
तजि धन धाम निवास कर काशी में नित तपनिरत॥

श्री

विन्ध्यनाथपदावली

(१)

भजु भजु विश्वनाथ परमेश्वर योगी सुरनाथ।
दिकूपट धारण करथि सदा नीलकंठ भेला मथन यथा।
श्वेतवर्ण शशि शोभथि माथ वर और अभय दहिन दुओ हाथ।
परशु और मृगशावक बाम चारि भुजा पूरथि मम काम॥

(२)

जय जय जय शिवशंकर मंगल करथि शुभंकर।
फणिपति हार शोभ कंठ संग पिशाच बहुत लंठ।
शशि कर सम रंग देहक साध्य सदाशिव नेहक।
जटाजूट गंगा हस्तिछाल पट नृत्य करथि हर भल नट॥

(३)

हमाराके नेनेचलू हे ऊधो॥ ध्रु०॥
कोना रहति व्रजबाला हरिबिनु कोन विधि पीर सहू।
अब हम विष खाय मरब पुनि कि कहत लोक कहू।

वितइछ छन छन युग अनेक सम को देखि धैर्य धरू ।
कृष्ण कृष्ण कै आब मरब हम कोन उपाय करू ।
विन्ध्यनाथ मन उद्धव एतवा हमर विलाप सुनू ।
प्राणनाथ के' आनि मिलाऊ ईटा पुण्य करू ॥

(४)

शिवशंकर सीस धर्यो जिनको
पृथिवी पर भार न कोई सहा ।
जिनको जप ताप कते करिकै
यश सिन्धु भगीरथ खूब लहा ।
तबतें भई शून्य जटा हर की
विधि का भी कमंडलु शून्य रहा ।
मति मूढ पियो जल स्नान करो
वसुधा में सुधारस जात बहा ॥

(५)

ध्रुव जी को अचल पदवी दीन्ह ।
धीर यमुना के अगम तट बाँसुरी रव कीन्ह ॥
गोपिका सुरनायिका सम सबहि बस कै लीन्ह ।
असुरसुत प्रह्लाद रक्षक मातु यसोमति कीन्ह ॥
को कहे कछु समुझि परत न महा लीला कीन्ह ।
भक्त दुष्ट समान देखत कंस बड़ दुख दीन्ह ॥
योगि वर दुर्लभ महत्पद पलक भर में दीन्ह ।

ब्रह्म परमानन्द अद्भुत रंग लीला कीन्ह ॥
विन्ध्यनाथ पुराहु आशा परम अधरम लीन ॥

(६)

ऊधो तू जाय मुरारि को तो कहियो भला
बाला सब ब्रज की हठयोग कैसे ठानेगी ।
नाग शिशु समान कच टेढा को बनावे जटा
तन में भसम वस्त्र गेरुआ रँगावेगी ।
वायु ही अहार करि नित्य तो जपेगी तुझे
ओढिके तो कंथा नित शृंगियाँ बजावेगी ।
एक बात ऊधो तू कहियो तो विचारिबे को
एती ब्रजबाला मृगछाला कहँ पावेगी ॥

(७)

श्याम किशोर गये ब्रज छोड़ि भये कुबजा बस जाय वहाँ ।
बिसरी यमुनातट की सभ वृत्ति चोराय लियो सभ वस्त्र जहाँ ॥
निन्द भयो न कभी ब्रज में इस रैनि यहाँ उस रैनि वहाँ ।
ब्रज नागरि नीर बहाय पुछय द्रुम बोलु कदम्ब गोविन्द कहाँ ॥

(८)

यदुकुल यसोदा जो तेरो पुत
दय डारो गुलाल खराब कियो ओढ़नो ।

सुनु नन्दरानी तेरो पुत नन्दलाल
जाको जात है गोश्राल सो मेटाय दिश्रो अञ्जनी ।
एते कहि बोली ब्रज नागरि छबीली न्यारी
नयन युग जाके जोड़ा बर खञ्जनी ।
तुम अभी जानोगे वो आते हैं
गोपाल लाल मन्द मन्द बोलत गोविन्द पाँओ पैजनी ॥

(९)

बासव क्रोध कियो ब्रज में जब बूड़ते ब्रज को श्यामहि राखी ।
यसोदाजी ऐसो कन्हैया मुरारी को
क्यों नहिं प्रेम से छाती लगाती ।
बिना उनके मैं कियो वचस्यो उनकी यस वीणा में क्यों नहिं गाती
और को जो होत्यो सो होत्यो सखी
गहत्यो ना गोविन्द तो मैं बह जाती ॥

(१०)

आये कारे बादर मखोरी श्याम आये नहीं
वा बिना सारी रैनि तड़पतु बीततु है ।
क्या याई देश में बर्षा ऋतु आय गयो
और देश मोर दादुल सोर ना करतु हैं ।
जो होते यायी सावन वा देश जहाँ कन्त मेरो
होतो ठीक बाई जो मैं स्वप्न में देखतु हैं ।
वे तो हैं गृहस्थ ना जाने कैसे चयन होत
सावन की घटा देखि योगी जटा पटकतु हैं ॥

(११)

जाती हूँ यमुना तीर नीर भरिबे को जब
नयन युग खञ्जन तें नीर बह जातु हैं ।
मारै मार धार चोखवाले शर तें नित
जो पन्नगी सी आय हृदय को डसतु हैं
ऊधो तुम जाय मेरो हाल नन्दलाल जी तें कहियो
मेरी रैनि रोने में बितत हैं ।
स्वप्न में भी देखती हूँ नन्दलाल साँवरे को ॥
वृन्दाबन आजु आली खाली सी लगतु है ॥

(१२)

नील दुकूल में निन्द पड़ी मुख
जाको हैं पुखबर इन्दु-छटा-सी ।
बाई समय बनबारी उठ्यो
जो चौंकि उठी जब विद्यु-छटा-सी ।
विदेश में जाउगा प्रान कहा जब
मुरझाति पड़ी सुरैनि घटासी ।
कान्हक कान में आँगुरदय के रही
लपटाय लवङ्ग-लता-सी ॥

(१३)

नागरि जो कबही रस की
बतिया न करे तस प्रेम भुलाऊँ ।

स्वामी की बात सुनी पै भगे तस
आपहिँ प्यारे की बात बनाऊँ।
रति हाल बुभै न कभी सजनी तस
मञ्जिल प्यारे के पास हो जाऊँ।
जो मेहरी देहरी नहिं चापत
ताहि मृदङ्ग बजावति लाऊँ॥

(१४)

आजु की समैया कछु बरनत चलत नाहीं
दादुल औ मोर गण शोर करे बन में।
मैं तो अटा पर थी विद्युछटा देखि पड़ी
पर थी वह कमान मकरध्वज की घन में
एक पल मानो बर्ष उडुगण गगन जेते
अस्थि अवशिष्ट रहीं मांस नहीं तन में
ऐहो तो आउ शीघ्र मेरी अब निश्चय कौन
आज मरूँ काल्ह मरूँ मरूँ एक छन में॥

(१५)

जब पापी दुःशासन सुरापियों में अग्रगण्य
द्रौपदी को पकड़ि सभा बीच डारी है।
हाहा कृष्ण मोरे अब त्राण करो दीनबन्धु
पाँचो पति तमासबीन और सब न्यारी हैं।
एती कही द्रौपदी कि बसन न घटत कबहू
भीष्म द्रोण कर्ण सोचि मन में विचारी है

सारी है कि नारी है कि नारी मध्य सारी है
कि नारिहूँ की सारी है कि नारी है कि सारी है॥

(१६)

मन्द मन्द दक्षिणानिल करिके मार तीर मारय
कोकिल कुहू कुहू करे गेह नाहीं कंत री।
सुगन्धिदार मल्लिका औ यूथिका फलकि हँसै
जाको है पति गृह वाको सुख अनन्त री।
पतत्रीगण कू कू करत हूँ हूँ करति अलि अवलि
याही समय योग छाडत जेते हैं सन्त री।
वृक्ष नव कल्प लई शिशिर को अन्त भई
विरही जन अन्त करण प्रगट्यौ वसन्त री॥

(१७)

समदाउनि

हर हे देल धिया समुभाय।
कहल सुनल सभ बिसरघु एतहि
आब हम कहब की बुभाय
सदा रहति अपनेक अनुचरि भेलि
जनु दिय छिन बिसराय।
चंचलि अल्प वयस केरि धिया मोरि
ज्ञानी न भेल किछु हाय

दोष करति बहु छमब हमर जानि
देल हम चरण लगाय ।
जत छल हमर मनोरथ से सभ
सकल पुराअोल आय
बहुत कहब की कहल में रहिहथि
दिहथि तुरन्त पठाय ।
विन्ध्यनाथ भन ई सभ गबइत
धैरज सभक हेराय ।
कें कर उतर एहंन उचती
केर गदगद कण्ठ जमाय ॥१॥

(१८)

धिया हे रहब सभक प्रिय जाय ।
एतय छलहुँ सभके अति प्रिय भेलि
नेनपन देखि जुड़ाय
ओतय रहब सभके अनुचरि भेलि
भेटति ओतय नहिं माय ॥
नेनपन सँ हम कतेक सिखाओल
बहुत बुझाय बुझाय
जइतहिं ओतय रहब तहिना भेलि
जनु दिय नाम हँसाय ॥

बाजि सकी नहिं बहुत कहब की
आब कहल नहि जाय
सेवा सभक करब तत्पर भय
लेब हम तुरन्त अनाय ।
छोड़थि पयर नहिं माय कहथि नहिं
गद्गद कंठ सुखाय
भन विन्ध्यनाथ वियोग काल में
कानब एक उपाय ॥२॥

—

